देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८६/२

ISSN : 2395-7115

Impact Factor
3.811

Ajmer Visheshank

# Bohal Shodh Manjusha

**AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL**

## बदलती शिक्षा पद्धति और शिक्षकों की भूमिका

डॉ. सुलक्षणा अहलावत
प्रधान सम्पादक

प्रो. उन्नति शर्मा
विशेषांक सम्पादक

डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट
सम्पादक

*Publisher :*
**Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)**
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

Scanned with OKEN Scanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| 22. | **Role of Yoga in Education** | **Dr. Mahendra Kumar Dhakad Madhu Lata Sharma,** | **109-114** |
| 23. | आधुनिक युग बनाम शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त समस्याएँ | डॉ० सुनील पाटिल | 115–121 |
| 24. | चित्रा मुद्गल की कहानियों में शहरी समाज का यथार्थ | वर्षा रानी सिन्हा, डॉ. आर.के. पाण्डेय | 122–125 |
| 25. | प्राचीनशिक्षा साहित्यञ्च | पङ्कज भट्टः | 126–131 |
| 26. | महाभारतीय शान्तिपर्व में मानव-मूल्य परक शिक्षा | दिव्या शिवानी | 132–136 |
| 27. | शिक्षा और समाज (महर्षि दयानंद पर आधारित संस्कृत महाकाव्यों के सन्दर्भ में) | सुनीता मीरवाल, डॉ. आशुतोष पारीक | 137–143 |
| 28. | पंत के काव्य में प्रगतिशील चेतना | प्रा. माने एस.एस | 144–149 |
| 29. | **The Current Challenges and Issues in Indian Education** | **-Dr Arvind Kumar Sharma, Dr. Rekha Sharma** | **150-152** |
| 30. | प्राचीन व वर्तमान शिक्षा पद्धति में नारी शिक्षा | डॉ. ज्योति पटेल | 153–158 |
| 31. | ऑनलाइन शिक्षा – चुनौतियाँ, भविष्य एवं सम्भावनाएँ | डॉ. प्रियंका यादव | 159–163 |
| 32. | रेणु के रिपोर्ताज | डॉ. सिन्धु सुमन | 164–170 |




Scanned with OKEN Scanner

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
अजमेर सेमिनार विशेषांक Page No. : 132-136
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# महाभारतीय शान्तिपर्व में मानव-मूल्य परक शिक्षा

-दिव्या शिवानी
शोध छात्रा (नेट), संस्कृत विभाग, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ, बिहार।

सृष्टि की विभिन्न रचनाओं में सर्वाधिक श्रेष्ठ, बुद्धिजीवी, विवेकशील, प्रगतिशील रचना है– "मानव"। मानव अर्थात् मनुष्य, जिसे मनु की संतान कहा गया है। मनुष्य चाहे किसी भी धर्म–संप्रदाय से हो, सर्वप्रथम वह मनुष्य है और प्रत्येक मनुष्य विश्व की एक इकाई है। किसी भी सभ्य समाज के निर्माण में प्रत्येक मनुष्य का शिक्षित होना अति आवश्यक है। शिक्षित होने से तात्पर्य स्कूली शिक्षा मात्र से नहीं है अपितु मनुष्य की आंतरिक क्षमता, व्यवहार, व्यक्तित्व को अनुशासनात्मक तरीके से उभारने तथा स्वयं को जानने के कौशल से है।

वास्तव में शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली वह प्रक्रिया है जहां, जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत, मानव अपने अनुभवों द्वारा कुछ ना कुछ सीखता ही रहता है। शिक्षा ही मनुष्य के व्यवहार तथा व्यक्तित्व को परिमार्जित एवं परिवर्धित करती है। किताबी ज्ञान के साथ–साथ अपने अनुभवों से सीखे ज्ञान द्वारा ही मनुष्य सामाजिक, राजनैतिक, भौतिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक वातावरण में स्वयं को स्थापित कर सकता है। मनुष्य पूर्णतः शिक्षित तभी हो सकता है जब, उसे अपने मानवीय–मूल्यों की समझ हो तथा वह अपने मूल्यों पर अडिग रहे। मानव के आंतरिक भाव ही मानव–मूल्य कहलाते हैं, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रतिबिंबित करते हैं। इसके अंतर्गत सत्य, क्षमा, दया, कर्तव्य पालन, शांति, अहिंसा, सौहार्द भावना, परोपकार जैसे मानव हितकारी तथ्य एवं सत्य परिगणित होते हैं। मानव–मूल्य के ज्ञान द्वारा ही हम एक उच्च आदर्श वाले विकसित समाज का निर्माण कर सकते हैं।

'श्री जगदीश सहाय जी' के शब्दों में –"मानव सही अर्थों में मानव तभी कहलाता है जब उसका सामाजिक अंतःकरण जाग्रत होता है, जब वह अपना हित मानव जाति के हितों में देखने लगता है। सहानुभूति, बंधुत्व और निःस्वार्थ सेवा अर्थात् अपने जीवन को खतरे में डालकर दूसरों की भलाई करना उसके आवश्यक गुण बन जाते हैं। ऐसे पुरुष ही संसार में श्रेष्ठ समझे जाते हैं और मानव जाति के गौरव कहलाते हैं।"[1]

प्राचीन काल से हमारे ऋषि–मुनियों ने जीवन में मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता तथा अनिवार्यता के महत्व को जानकर इसके आचरण पर विशेष बल दिया है। वास्तव में मनुष्य को सर्वप्रथम स्वयं के आंतरिक मूल्यों को जानना चाहिए क्योंकि, स्वयं को जाने बिना हम दूसरों की भावनाओं, समस्याओं तथा यथार्थ को नहीं जान सकते। अपने सुसंस्कृत व्यक्तित्व का निर्माण करना ही एक कुशल मानव का लक्ष्य होना चाहिए। वर्तमान युग में इन्हीं मानवीय मूल्यों को हम भूलते चले जा रहे हैं और अपनी अशिक्षा एवं स्वार्थपरता के कारण अपने ही परिवार, देश तथा विश्व को पतन की राह पर ले जा रहे हैं। मानव–मूल्यों में निरंतर होने वाले पतन का ही



Scanned with OKEN Scanner

परिणाम है कि आज हमारे समाज में वीभत्स घटनाएं बढ़ती जा रही है और संविधान तक की चिंता ना करते हुए लोग इस दलदल में फंसते चले जा रहे हैं।

इस समाज को पुनः आदर्श सनातन संस्कृति से जोड़ने के लिए तथा अपने मानवीय मूल्यों को जानने के लिए संस्कृत वांग्मय के माहनीय विश्वकाव्यों का अवगाहन तथा अवलोढ़न अत्यावश्यक है। इन्हीं मानवीय मूल्यों के ज्ञान से सुशोभित महाकाव्यों में अग्रणी महाकाव्य है, महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास जी द्वारा रचित– "महाभारत"। विश्व साहित्य को प्रकाशित एवं चमत्कृत करने वाला, विभिन्न विषयों को समाहित करने वाला, विशालकाय ग्रंथ है –"महाभारत"। वैसे तो संपूर्ण महाभारत अमूल्य ज्ञान निधियों से भरा पडा है, परंतु महाभारत के अठारह पर्वों में सबसे बृहत् "शान्तिपर्व" में मानव–मूल्य निहित शिक्षा का भंडार है, जो हमें हमारे मानवीय मूल्यों के ज्ञान के साथ–साथ अपने समाज को बेहतर बनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। "शान्तिपर्व" तीन प्रधान खंडों में विभक्त है – राजधर्मानुशासन, आपद्धर्मपर्व एवं मोक्षधर्मपर्व। यह तीन खंडों वाला समग्र विराट शांति पर्व मानवीय मूल्यों की मणि एवं परमप्रकाशकारी मूल्यात्मक ज्ञान से विभूषित है। इसका मंथन देवासुर समुद्रमंथन के सुपरिणामों से कथमपि न्यूनतर नहीं है। शान्तिपर्व में निहित 'मानव–मूल्य शिक्षा' मनुष्य के जीवन को सफल बनाने की दृष्टि से अतुलनीय है। वस्तुतः धर्म ही हमें मानव–मूल्यों की सीख देता है। मानव–मूल्य हमारे वो आंतरिक भाव हैं जो हमें अच्छे–बुरे, सही–गलत, उचित–अनुचित का ज्ञान कराते हैं।

कुरुक्षेत्र के भीषण युद्ध के बाद युधिष्ठिर जो हमेशा सत्य एवं धर्म पर चला, उसने अपने ही प्रियजनों की दुर्दशा देख आह्लादित हो स्वयं को ही इस विनाश का कारण मानने लगा। युधिष्ठिर के अनुसार क्षमा, इंद्रियों को संयम में रखना, किसी से ईर्ष्या ना करना, अहिंसा के पथ पर चलना और सदैव सत्यभाषण करना ही श्रेष्ठ धर्म है, यही मनुष्य के मूल्य हैं। परंतु स्वयं को इस युद्ध की दुर्दशा का कारण मानते हुए अर्जुन से कहते हैं –

वयं तु लोभान्मोहाच्च दम्भं मानं च संश्रिताः।
इमामवस्थां सम्प्राप्ता राज्यलाभबुभुत्सया।।[2]

अर्थात् "हम लोग तो लोभ और मोह के कारण राज्यलाभ के सुख का अनुभव करने की इच्छा से दंभ और अभिमान का आश्रय लेकर इस दुर्दशा में फंस गए हैं।" वास्तव में लोभी व्यक्ति विजय फल नहीं भोग सकता। जीवन को शांत और सुखमय बनाने के लिए असंतोष, प्रमाद, अशांति, मोह, अभिमान जैसी इच्छाओं को त्याग कर ही सुखी जीवन जिया जा सकता है। परंतु वर्तमान मानव इन बातों को अनसुना कर पाप की ओर अग्रसर हो जाता है, जिस कारण मानव–मूल्यों का ह्रास होता चला जा रहा है। 'किसी से द्रोह न करना, सत्य बोलना, समस्त प्राणियों को यथा योग्य उनका भाग समर्पित करना, सब के प्रति दया भाव बनाये रखना, बिना दी हुई वस्तु को न लेना, मन और इंद्रियों का संयम करना, मृदुता एवं अचंचलता' आदि गुणों को अपनाना–ये श्रेष्ठ एवं अभीष्ट मानवीय मूल्य की सीख महाभारत जैसे धर्मग्रंथ ही दें सकते हैं। शान्तिपर्व में युधिष्ठिर के चारित्रिक गुणों को उजागर करते हुए विभिन्न मानवीय–मूल्यों को उभारा गया है – धैर्य, क्षमाशीलता, शरणागतों का सत्कारपूर्वक विशेष सम्मान करना, दान, शांति, स्थिरचित्तता, काम, क्रोध, लोभ से मुक्त, सत्यभाषी, सहनशीलता आदि विभिन्न मानवीय मूल्यों को अपने जीवन में उतारने के कारण ही उन्हें विजय माला का आलिंगन प्राप्त हुआ। वर्तमान समय में तो अधर्मी मनुष्य इतने भ्रष्ट हो गए हैं कि भ्रूण हत्या जैसे पाप को भी सरलता से कर जाते हैं। क्या ऐसे पाप मानव–मूल्य के अवनति का परिणाम नहीं है? मानव–मूल्य को जानना एवं उसे अपने जीवन में उतारने



Scanned with OKEN Scanner

की महती आवश्यकता है। भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से सभी के लिए उपयोगी नौ धर्म अर्थात् मूल्य शिक्षा का ज्ञान दिया है–" किसी पर क्रोध ना करना, सत्य बोलना, धन को बांटकर भोगना, क्षमाभाव रखना, अपनी ही पत्नी के गर्भ से संतान पैदा करना, बाहर–भीतर से पवित्र रहना, किसी से द्रोह न करना, सरलभाव रखना और भरण–पोषण के योग्य व्यक्तियों का पालन करना।"[3]

धर्म के प्रति आस्था रखने पर हम अपने मूल्यों की अवहेलना कभी नहीं करेंगे। "अहिंसा, सत्यभाषण, क्रोधशून्य बर्ताव, दूसरों की आजीविका तथा बंटवारे में मिली हुई पैतृक संपत्ति की रक्षा, स्त्री–पुत्रों का भरण–पोषण, बाहर–भीतर की शुद्धि रखना तथा द्रोह भाव का त्याग करना।"[4] इन सब मूल्यों की शिक्षा मान्धाता और इंद्र के संवाद रूप में भी हमें प्राप्त होता है, जिसे अपने जीवन में उतारने से सभी का कल्याण होगा।

इंद्र–बृहस्पति संवाद द्वारा दुष्ट व्यक्ति के लक्षण बताए गए हैं। बृहस्पति जी कहते हैं– "जो परोक्ष में किसी व्यक्ति के दोष ही दोष बताता है, उसके सद्गुणों में भी दोषारोपण करता रहता है और यदि दूसरे लोग उसके गुणों का वर्णन करते हैं तो जो मुंह फेर कर चुप बैठ जाता है, वही दुष्ट माना जाता है।"[5] यह दुष्टता मानव–मूल्य की अवनति ही तो है। इसलिए अपने मूल्यों का ज्ञान परम आवश्यक है जिसके लिए महाभारत जैसे धर्म ग्रंथों की भूमिका विशेष स्थान रखती है।

आज के समय में किसी की प्रगति देख उससे ईर्ष्या का हो जाना, अपने स्वार्थ के लिए ही कार्य करना, दूसरों को अपमानित करने में संकोच ना करना, छल–कपट से आगे बढ़ना ही लोगों का ध्येय बन गया है। ऐसे में श्रेष्ठ समाज की कल्पना करना संभव ही नहीं है। आवश्यकता है इन भावनाओं से परे उठकर सभी के मंगलकामना की भावना के ज्योत को प्रज्ज्वलित करने का। शान्तिपर्व में शील के प्रभाव का वर्णन करते हुए कहा गया है– "मन, वाणी और क्रिया द्वारा किसी भी प्राणी से द्रोह न करना, सब पर दया करना और यथाशक्ति दान देना–यह शील कहलाता है। "[6]

धर्म, सत्य, बल, सदाचार और लक्ष्मी ये शील के आधार हैं, इसलिए शीलवान् बनने की प्रेरणा दी जाती है। भीष्म ने शान्तिपर्व में युधिष्ठिर से समस्त अनर्थों का कारण लोभ को बताया है। मनुष्य के समस्त पापों की प्रवृत्ति का आधार लोभ ही तो है। लोभ में फंसा मनुष्य अपने संपूर्ण मानवीय मूल्यों का ह्रास कर अंत में दुःख के सागर में डूब जाता है। भीष्म कहते हैं –

अतः पापमधर्मश्च यथा दुःखमनुत्तमम्।
निकृत्या मूलमेतद्धि येन पापकृतो जनाः।।[7]

अर्थात् "लोभ से ही पाप, अधर्म तथा महान दुरूख की उत्पत्ति होती है। शठता तथा छल–कपट का भी मूल कारण लोभ ही है। इसी कारण मनुष्य पापाचारी हो जाते हैं।" इसके अतिरिक्त लोभ से ही क्रोध, काम, मोह, निर्लज्जता, अभिमान, द्रोह, अविश्वास, निन्दा, ईर्ष्या, घृणा आदि दोष प्रकट होते हैं। कहा गया है–

यो न पूरयितुं शाक्यो लोभः प्राप्त्या कुःद्वह।
नित्यं गम्भीरतोयाभिरापगाभिरिवोदधिः।।[8]

अर्थात् "जिस प्रकार गहरे जलवाली बहुत सी नदियों के मिल जाने से भी समुद्र नहीं भरता है उसी प्रकार कितने ही पदार्थों का लाभ क्यों ना हो जाए, लोभ का पेट कभी नहीं भरता है।"

हमारे बृहत् समाज में अशिक्षा या अज्ञान के कारण मानव विभिन्न कष्टों को उठाता हुआ विपत्तियों के



Scanned with OKEN Scanner

समुद्र में डूब जाता है। भीष्म जी ने–"राग, द्वेष, मोह, हर्ष, शोक, अभिमान, काम, क्रोध, दर्प, तन्द्रा, आलस्य, इच्छा, वैर ताप, दूसरों की उन्नति देखकर जलना और पापाचार करना–इन सबको अज्ञान बताया है।"[9] इसी अज्ञानता तथा लोभ के कारण हम अपने मूल्यों को पीछे छोड़ बुराई की ओर अग्रसर हो रहे हैं। परंतु परिणाम सुखद नहीं अपितु बहुत ही दुःखद है, कि हम "वसुधैव कुटुंबकम्" का ज्ञान बांटने वाले अपने ही स्वार्थ तक सिमट के रह गए हैं। अपने मन को संयमित रखने वाला ही सुख से रहता है।

शान्तिपर्व में दम के माहात्म्य के अंतर्गत कहा गया है–" क्षमा, धीरता, अहिंसा, समता, सत्यवादिता, सरलता, इन्द्रियविजय, दक्षता, कोमलता, स्थिरता, उदारता, क्रोध, हीनता, संतोष, प्रिय वचन बोलने का स्वभाव, किसी भी प्राणी को कष्ट ना देना और दूसरों के दोष ना देखना।"[10] इन सद्गुणों का उदय दम कहलाता है और यह सद्गुण अपने जीवन में उतारने वाला मनुष्य ही एक सार्थक जीवन की पहल कर सकता है। ये मानवोचित गुण प्रत्येक मानव को अपने मानवीय मूल्यों को संभाल के रखने और समाज में प्रसारित करने में सहयोग करेंगे। 'लोभ, मोह, काम, क्रोध, मद और मात्सर्य' ये सब मनुष्य के शत्रु हैं। परंतु मनुष्य इनसे मित्रता कर अपने मानवीय मूल्यों का स्वयं ही हानी कर बैठता है और अनैतिक कार्यों में संलग्न हो जाता है। धृतराष्ट्र के पुत्रों में ये सभी दोष थे, इसलिए उसके पुत्रों की दुर्गति हुई। मनुष्य अनैतिक कार्यों को करते हुए अपनी सारी अच्छाइयों, अपनी नैतिकता को पीछे छोड़ बुरे से बुरे कार्यों की तरफ आकर्षित हो जाता है। परंतु अंत में इन सब के कारण उसे दुख तथा असंतोष के अलावा कुछ नहीं प्राप्त होता। भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा था–

यश्चाधर्मं चरेल्लोभात् कामक्रोधावनुप्लवन्।
धर्म्यं पन्थानमाक्रम्य सानुबन्धो विनश्यति।।[11]

अर्थात् "जो मनुष्य लोभ के कारण काम–क्रोध का अनुसरण कर धर्म को छोड़ अधर्म का आचरण करने लगता है, उसका सगे संबंधियों सहित बहुत जल्द विनाश हो जाता है।" मानव–मूल्यों को समझने वाले मनुष्य हमेशा सत्य के मार्ग पर चलते हैं तथा त्याग, क्षमा, धैर्य इन सब के द्वारा नैतिक दृष्टि रखते हुए आचरण करते हैं और संयमित जीवन द्वारा संपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

वर्तमान समाज में मानव–मूल्यों का ह्रास दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। मूल्यों के ह्रास का ही परिणाम है कि हमारे समाज में सब अपने–अपने स्वार्थ के वशीभूत हो मात्र अपने सुख–सुविधाओं तक ही सिमट कर रह जाते हैं। हमारे समाज में हो रहे भ्रष्टाचार, हिंसा, अपहरण, कालाबाजारी, आतंकवादी हमले, यह सब मानव–मूल्यों के ह्रास का ही तो परिणाम है। मनुष्य को पथभ्रष्ट होने से बचाने के लिए महाभारत जैसे धर्म ग्रंथ हैं, जो हमें, हमारे जीवन को बेहतर बनाने का मर्म सिखाते हैं।

महाभारत के शान्तिपर्व में मानव–मूल्य के ज्ञान भंडार को जानकर हम अपने भविष्य को संवार सकते हैं। प्रत्येक मानव, मान–अपमान, लाभ–हानि, उन्नति–अवनति, इन्हीं बातों में फंसा रहता है, जबकि आवश्यकता है इन सब से ऊपर उठकर सबके लिए एक समान भाव रख मित्रवत् रहने की। सच्चाई, सरलता, शुद्धता, सदाचार, दया, क्षमा, धैर्य इत्यादि मानवीय–मूल्यों द्वारा स्वयं तथा अपने समाज को श्रेष्ठता के शिखर तक पहुंचाने की।

इस प्रकार महाभारत के शान्तिपर्व में मानव–मूल्य परक ज्ञान का समुद्र है। इस ज्ञान रूपी सागर के जितनी गहराई में हम जाएंगे उतना ही हमारे अंदर के अज्ञान का नाश होगा। शान्तिपर्व के मानव–मूल्यों के ज्ञान निधि को अपने जीवन में संचित कर हम, हमारे समाज को श्रेष्ठ बना सकते हैं।



Scanned with OKEN Scanner

**सन्दर्भ सूची :-**


1. मानव जीवन और उसके मूल्य – श्री जगदीश सहाय, पृष्ठ सं. – 66
2. महाभारत (पंचम खण्ड) शान्तिपर्व, अध्याय – 07 / 07
3. वही, अध्याय – 60 / 07–08
4. वही, अध्याय – 65 / 20
5. वही, अध्याय – 103 / 46
6. वही, अध्याय – 124 / 66
7. वही, अध्याय – 158 / 03
8. वही, अध्याय – 158 / 12
9. वही, अध्याय – 159 / 06–07
10. वही, अध्याय – 160 / 15–16
11. वही, अध्याय – 212 / 07



– दिव्या शिवानी

D/O – बिनोद चन्द्र झा,

जय प्रकाश नगर , पूर्णियाँ कॉलेज चौक, पूर्णियाँ– 854301, बिहार।

मोबाइल नं. – 7909061100

व्हाट्सएप नं. – 7909061100

Email – shivanidivya.sd@gmail.com





Scanned with OKEN Scanner

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-25 VOLUME-3 IMPACT FACTOR-SJIF-6.586, IIFS-4.125

ISSN-2454-6283 जुलाई–सितंबर, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

# शोध-ऋतु

3

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ.सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

Scanned with OKEN Scanner

# अनुक्रमणिका

01.कृष्णा सोबती की रचनाओं के विविध आयाम–*[1]राकेश प्रधान, [2]डॉ.रेशमा अंसारी* ..... 6

02.रीतिकालीन कवि देव के काव्य की विशेषता–*डॉ.अरुणा,* ..... 9

03.हिंदी की आरम्भिक कहानियाँ–*नागेन्द्र प्रसाद सिंह पटेल* ..... 11

04.युगबोध एव प्रगतिशीलता : केदारनाथ सिह–*डॉ0प्रतिमा सिंह* ..... 15

05.आधुनिक पूर्व हिन्दी साहित्य में वृद्ध दशा का वर्णन–*नीता जाधव* ..... 19

06."कालापानी संज्ञा मुझको खलती है" काव्य संग्रह में समसामयिक संदर्भ"–*डॉ. रत्ना कुशवाह* ..... 21

07.प्रसंग : ओड़िआ आत्मकथा–*डॉ.शिशिर बेहेरा* ..... 24

8.साहित्य के वर्तमान लेखक और पाठक–*डॉ. अनिल कुमार सिंह* ..... 26

9.आधुनिक स्त्री : 'संघर्ष से सक्षम तक'–*प्रा.डॉ.शैलजा जायसवाल* ..... 29

10.मुकुट बिहारी 'सरोज' के काव्य में अलंकार योजना–*डॉ.राहुल श्रीवास्तव* ..... 32

11.प्रेमचंद की स्त्री दृष्टि–*डॉ.सुषमा देवी* ..... 34

12.आयुर्वेद में वर्णित योनिव्यापद् व्याधि : गर्भिणी के विशेष आलोक में–*खुशबू कुमारी* ..... 36

13.आधुनिकता की अवधारणा और हिन्दी साहित्य–*सुरेन्द्र कुमार पटेल* ..... 39

14.रेणु की हास्य–व्यंग्य रचनाएँ–*डॉ.सिन्धु सुमन* ..... 43

15.ज्योतिराव फुले एवम् गोविन्द रानाडे का सामाजिक चिंतन की प्रासंगिकता–*भैरुचंद* ..... 46

16.महाभारत–शान्तिपर्व का वैशिष्ट्य–*दिव्या शिवानी* ..... 48

17.आधुनिक समय में परिवार के बदलते स्वरूप : एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण–*अंजली कुमारी* ..... 50

18.दूसरा सप्तक की भूमिका: एक विश्लेषण–*डॉ.संगीता वर्मा* ..... 52

19.सम्पोषणीय विकास के सन्दर्भ में वैश्विक राजनीति और भारत –*सन्तोष कुमार* ..... 54

20.सर्वेश्वर : सघन–गहन संवेदना का कवि–*डॉ0 ऋचा सुकुमार* ..... 57

21.निराला के काव्य में सामाजिक यथार्थ (विधवा, तोडती पत्थर, दान के संदर्भ में)–*डॉ.काळे मदन भाऊराव, बीड* ..... 60

22.भूमण्डलीकरण की हिन्दी कविता में सामाजिक चिंतन–*रोहित कुमार सिंह कुशवाहा* ..... 62



Scanned with OKEN Scanner

# 16.महाभारत–शान्तिपर्व का वैशिष्ट्य

*–दिव्या शिवानी*
शोध छात्रा (नेट),
संस्कृत विभाग, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ, बिहार।

संस्कृत वांग्मय के अग्रणी महाकाव्यों में महाभारत का विशेष स्थान है। महाभारत में धर्म के ज्ञान के साथ – साथ दार्शनिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, आध्यात्मिक आदि ज्ञाननिधि संग्रहित हैं। तभी तो कहा गया है –

"यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्"। [1]

महाभारत जैसे अद्भुत ग्रंथ ही हैं जो मानव को कीचड़ से उठकर कमल बनने की सीख देते हैं। कौरवों के बीच रहकर भी पांडवों ने अपने आप को बुराइयों से बचाकर श्रेष्ठता के मार्ग पर चलकर विजय होने का मार्ग दिखाया है। एक लाख श्लोकों वाले विशालकाय महाभारत जो शतसाहस्रीसंहिता के नाम से भी विख्यात है, उसमें अठारह पर्व हैं। अठारह पर्वों में बारहवां पर्व है– "शान्तिपर्व"। शान्तिपर्व में युद्ध के बाद की घटनाओं का वर्णन है, जहां युद्ध समाप्ति पर युधिष्ठिर का शोकाकुल हो राज्यत्याग के लिए उद्धत होना तथा युधिष्ठिर को राजनैतिक ज्ञान का मर्म सिखाने के लिए श्री कृष्ण द्वारा भीष्म से ज्ञान प्राप्त करने की सलाह देना शामिल है।

वास्तव में शान्तिपर्व जीवन संघर्ष से विचलित एवं अशांत मन को शांति का मार्ग दिखाने तथा जीवन के मर्म सिखाने वाला विशेष पर्व है। शान्तिपर्व 365 अध्यायों में निबद्ध महाभारत का सबसे बृहत् पर्व है। इसके अंतर्गत राजधर्म, आपद्धर्म तथा मोक्षधर्म के उपदेश का उत्कृष्ट वर्णन है। शान्तिपर्व के तीनों उपखंडों की विशेषता है कि ये संपूर्ण मानव जाति के ज्ञान, बुद्धि, विवेक को बढ़ाने के साथ ही हमारे जीवन को सुखमय बनाने का विलक्षण ज्ञान हमें प्रदान करते हैं। शान्तिपर्व के तीनों खंडों में अनेक संवाद तथा आख्यान – उपाख्यान दृष्टिगोचर होते हैं, जिनके द्वारा जीवन रहस्य समझना आसान हो जाता है।

शान्तिपर्व के राजधर्मानुशासन पर्व का संपूर्ण महाभारत में विशेष स्थान है क्योंकि इसमें भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को राजधर्म का पाठ पढ़ाया गया है। सदैव धर्म में तत्पर, शूरवीर, महापराक्रमी, नीतिशास्त्र के ज्ञाता, इच्छा मृत्यु प्राप्त भीष्म पितामह की प्रशंसा में स्वयं श्री कृष्ण कहते हैं – "कौरववंश का भार संभालने वाले भीष्मरूपी सूर्य जब अस्त हो जाएंगे, उस समय सब प्रकार के ज्ञानों का प्रकाश नष्ट हो जाएगा "। [2] बहुत सारी कथाओं द्वारा एक राजा के क्या कर्तव्य होने चाहिए तथा अपने प्रजा का कल्याण किस प्रकार करें इन सबका महत्वपूर्ण वर्णन शान्तिपर्व में उपस्थित है, साथ ही काल की प्रबलता का विशेष उल्लेख भी है। भीष्म कहते हैं–कर्मसूत्रात्मकं विधि साक्षिणं शुभपापयोः। सुखदुःखगुणोदर्कं कालं कालफलप्रदम् ।। [3] अर्थात् " काल जीव के पाप – पुण्य कर्मों का साक्षी होता है। वह कर्म की डोरी का सहारा लेकर भविष्य में होने वाले सुख और दुःख का उत्पादक होता है। वही समयानुसार कर्मों का फल देता है "। इसलिए कौन सा कर्म करें और कौन सा नहीं इसकी विशद् व्याख्या भीष्म के उपदेशों में समाहित है जो सभी मनुष्य को सही मार्ग प्रशस्त करती है। भीष्म ने युधिष्ठिर को सभी वर्णों के लिए उपयोगी धर्म का वर्णन किया है, जो सभी के लिए विशेष है। इंद्ररूपधारी विष्णु और मांधाता के संवाद द्वारा राजधर्म की श्रेष्ठता अर्थात् सभी धर्मों का समावेश राजधर्म में ही प्रतिष्ठित किया गया है। राजधर्म की विशेषता में कहा गया है–

आत्मत्यागः सर्वभूतानुकम्पा लोकज्ञानं पालनं मोक्षणं च।
विषण्णानां मोक्षणं पीडितानां क्षात्रे धर्मे विद्यते पार्थिवानाम्।। [4]

अर्थात् " युद्ध में अपने शरीर की आहुति देना, समस्त प्राणियों पर दया करना, लोक व्यवहार का ज्ञान प्राप्त करना, प्रजा की रक्षा करना, विषादग्रस्त एवं पीड़ित मनुष्यों को दुःख और कष्ट से छुड़ाना – ये सब बातें राजाओं के क्षात्रधर्म में ही विद्यमान हैं "। भीष्म ने राजा के इहलोक तथा परलोक में सुख प्राप्ति के लिए 36 गुणों को बताया है जो शान्तिपर्व में विशिष्ट स्थान रखता है।

शान्तिपर्व में धर्मपूर्वक प्रजा का पालन, विद्वान् सदाचारी पुरोहित की आवश्यकता, उत्तम – अधम ब्राह्मणों के साथ राजा का बर्ताव, राजा के लिए मित्र और अमित्र की पहचान, गुप्त – मंत्रणा की विधि, राजा की व्यवहारिक नीति, दंड का औचित्य, राष्ट्र की रक्षा एवं वृद्धि के उपाय, राजा के कर्तव्यों का वर्णन, राजा के धर्म का वर्णन, सैन्यसंचालन की नीति, गणतंत्र राज्य का वर्णन तथा उसकी नीति इत्यादि का वर्णन राजधर्मानुशासन पर्व की विशिष्टता को बढ़ा देता है, क्योंकि राजधर्म का इतना विशद् वर्णन अन्यत्र मिलना असंभव है।

भीष्म द्वारा माता – पिता तथा गुरु की सेवा कर यश, कीर्ति तथा उत्तम लोक की प्राप्ति के मार्ग को बताया गया है। वर्तमान समय में प्रत्येक मनुष्य इसके महत्व को समझ ले तो किसी वृद्धाश्रम की आवश्यकता ही नहीं होगी। भीष्म की उक्ति है

– मातापित्रोर्गुरूणां च पूजा बहुमता मम ।



Scanned with OKEN Scanner

इह युक्तो नरो लोकान् यशश्च महदश्नुते ||[5]

अर्थात् " मुझे तो माता – पिता तथा गुरुजनों की पूजा ही अधिक महत्व की वस्तु जान पड़ती है। इस लोक में इस पुण्य कार्य में संलग्न होकर मनुष्य महान् यश और श्रेष्ठ लोक पाता है "। संपूर्ण राजधर्मानुशासन पर्व में राजा के कर्तव्यों के साथ ही विभिन्न संवादों द्वारा जीवन के गूढ़ रहस्य को बताया गया है, जो मानव जाति को श्रेष्ठता का मार्ग दिखाने का कार्य करती है। इसी कारणवश राजधर्मानुशासन पर्व को **' शान्तिपर्व का मस्तिष्क '** माना जाता है।

शान्तिपर्व में द्वितीय उपखंड आपद्धर्म पर्व है, जिसमें आपातकाल में राजा तथा प्रजा किस प्रकार अपने धर्म का निर्वाह करें इसका विशेष वर्णन है। आपत्तिग्रस्त राजा के कर्तव्य, राजा के लिए कोष संग्रह की आवश्यकता, बल की महत्ता, मर्यादा पालन करने वाले की सद्गति, शत्रुओं से सावधान रहने का ज्ञान, कूटनीति का उपदेश, आपातकाल में राजा के धर्म, शरणागत की रक्षा, बलवान् के साथ बैर न रखने का उपदेश इत्यादि का वर्णन इस पर्व की विशेषता को बढ़ा देता है। इसके साथ ही इस पर्व में भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को दूरदर्शी, तत्कालज्ञ और दीर्घसूत्री मत्स्यों के दृष्टांत द्वारा मनुष्य को आने वाले संकट से सावधान रहने का अद्भुत ज्ञान प्रदान किया गया है। कहा गया है – "जो पुरुष सोच – समझकर या जान – बूझकर काम करने वाला तथा सतत् सावधान रहनेवाला है, वह अभीष्ट देश और काल का ठीक – ठीक उपयोग करता है और उनके सहयोग से इच्छानुसार फल प्राप्त कर लेता है।"[6]

इस पर्व के अंतर्गत ही बिडाल और चूहे के आख्यान द्वारा किसी भी शत्रु से घिरे राजा के क्या कर्तव्य होने चाहिए, इसका विशद् वर्णन है, जो आपद्धर्मपर्व की विशिष्टता को दर्शाता है। आधुनिक काल की समस्त समस्याओं का कारण **' लोभ '** है, और इस लोभ से होने वाले अनर्थों तथा पापों को भीष्म ने इसी पर्व में युधिष्ठिर को समझाया है। साथ ही सत्य की महिमा, काम और क्रोध आदि तेरह दोषों के नाश के उपाय का भी विशेष वर्णन इसी पर्व में दृष्टिगोचर होता है।

शान्तिपर्व का तृतीय और अंतिम उपखंड है मोक्षधर्मपर्व, जिसमें राजा और प्रजा द्वारा अपने जीवन के अंत में मोक्ष प्राप्ति के उपायों का मार्मिक वर्णन है। इस पर्व की विशेषता है कि इसमें मोक्ष प्राप्ति के उपाय के साथ – साथ अनेकों ज्ञान निधि संचित हैं। मङ्कि नामक मुनि की कथा से स्पष्ट है धन की इच्छा रखने से दुख तथा उसकी कामना के त्याग से सुख की प्राप्ति होती है। इसीलिए सुखी रहने के लिये भीष्म ने बताया कि – " सबमें समता का भाव, व्यर्थ परिश्रम का अभाव, सत्यभाषण, संसार से वैराग्य और कर्माशक्ति का अभाव – ये पांचों जिस मनुष्य में होते हैं, वह सुखी होता है "।[7] मोक्षधर्म पर्व में सभी आश्रमों के जीवन को बिताकर मोक्ष द्वारा परब्रह्म की प्राप्ति के मार्ग को बताया गया है, जो इस पर्व की विशिष्टता है। चारों वर्णों – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के कार्यों का विशद् वर्णन भी इस पर्व में किया गया है। अपने इंद्रियों को संयम में रखकर आत्मा एवं परमात्मा के साक्षात्कार का उपाय तथा इसका महत्त्व इस पर्व की विशेषता को दर्शाता है।

इस पर्व में संख्याचार्य पंचशिख तथा जनक के संवाद द्वारा **" सांख्यदर्शन "** की तात्विक समीक्षा प्रस्तुत की गई है। पंचशिख ने जनक को सांख्य दर्शनानुसार मोक्ष मार्ग का उपदेश दिया था। जिस प्रकार मकड़ी अपने जाल में चक्कर लगाती रहती है, उसी प्रकार हम मनुष्य भी अपने कर्मजाल में भटकते रहते हैं। इस संसार चक्र को पार कर जाना ही मोक्ष है। पंचशिख का सिद्धांत है, कि –

यथार्णवगता नद्यो व्यक्तीर्जहति नाम च ।
नदाश्च ता नियच्छन्ति तादृशः सत्त्वसंक्षयः ||[8]

अर्थात् " जैसे नदियां, समुद्र से मिलकर अपना नाम – रूप त्याग देती है तथा जैसे बड़े – बड़े नद छोटी नदियों को अपने में विलीन कर लेते हैं उसी प्रकार तत्वज्ञान द्वारा जीवात्मा परमात्मा में विलीन हो जाता है, इसी का नाम मोक्ष है " । मोक्ष का इतना सुंदर वर्णन शान्तिपर्व की विशिष्टता को दर्शाता है। सांख्य के साथ – साथ योग द्वारा परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग भी शान्तिपर्व में ही वर्णित है। योगशास्त्रियों के अनुसार इंद्रिय, बुद्धि तथा मन को वश में करके आत्मा से एकता स्थापित करना ही सर्वोत्तम ज्ञान है।

वस्तुतः शान्तिपर्व आध्यात्मिक दृष्टि से अठारहों पर्वों में विशेष महत्वपूर्ण है। धर्म और अधर्म के स्वरूप के अंतर्गत धर्म पालन से सुख तथा अधर्म का आश्रय लेने से दुख की प्राप्ति के सत्य एवं तथ्य को शांति पर्व में उजागर किया गया है। साथ ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन पुरुषार्थ चतुष्टय में **" धर्म और मोक्ष "** की ही शान्तिपर्व में विशिष्टता को दर्शाया गया है। अध्यात्मज्ञान के वर्णन के साथ – साथ मोक्षधर्मपर्व में वर्णित **" पराशरगीता**



Scanned with OKEN Scanner

" – जिसमें राजा जनक को पराशर मुनि द्वारा कल्याण प्राप्ति, पुण्यकर्म से लाभ, सत्संग की महिमा, तपोबल की श्रेष्ठता, सत्कर्म की श्रेष्ठता तथा विभिन्न प्रकार के धर्म तथा कर्तव्यों का उपदेश किया गया है, जो इस पर्व को और भी विशिष्ट स्थान प्रदान कराती है। इसी पर्व में नारद जी द्वारा भगवान् नारायण के दो सौ नामों की स्तुति की गई है, जो इस पर्व की महिमा को चमत्कृत करने वाला है।

वास्तव में शान्तिपर्व आकार में ही नहीं अपितु इस पर्व में संग्रहित ज्ञाननिधि के कारण भी विशेष स्थान रखता है। सुंदर, सरल, बोधगम्य शान्तिपर्व में निहित **" धर्म और मोक्ष "** के ज्ञान मात्र राजा के लिए नहीं है अपितु संपूर्ण मानव जाति को प्रेरित करने का एक स्रोत है, क्योंकि मानव अन्य जीवों से श्रेष्ठ है। परंतु अपनी श्रेष्ठता की गरिमा बनाए रखने के लिए महाभारत जैसे धर्म का ज्ञान कराने वाले धर्मग्रंथों का अवगाहन अत्यावश्यक है। शान्तिपर्व की विशालता एवं उत्कृष्टता के कारण ही इसका महत्त्व अन्य पर्वों की तुलना में बढ़ जाता है।

**सन्दर्भ सूची:–**

**1)** संस्कृत साहित्य का इतिहास– वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ सं.–201 **2)** महाभारत(पंचम खंड) शान्तिपर्व– गीताप्रेस, गोरखपुर , अध्याय–46/23 **3)** वही, अध्याय – 33/19 **4)** वही, अध्याय – 64/27 **5)** वही, अध्याय – 108/03 **6)** वही, अध्याय – 137/24 **7)** वही, अध्याय – 177/02 **8)** वही, अध्याय – 219/42

## 17.आधुनिक समय में परिवार के बदलते स्वरूप : एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

*–अंजली कुमारी*
शोध छात्रा,समाजशास्त्र विभाग, पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया

परिवार को सबसे छोटी तथा महत्वपूर्ण इकाई के रूप में माना गया है परिवार समाज के स्तंभ हैं परिवार के अभाव में समाज के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता है प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी परिवार का सदस्य होता है आरंभिक समय में इस बात पर बल दिया जाता था कि परिवार विवाह भावनात्मक बंधनों सामूहिक निवास तथा घरेलू कामों पर आधारित एक समूह है परिवार को ऐसे परिभाषित किया गया है जिसमें विवाह कर्तव्य अधिकार माता–पिता और बच्चों का निवास स्थान समान हो माता पिता और बच्चों के संबंध अन्योन्याश्रित का हो आदि शामिल है आधुनिक समय में परिवार की अवधारणा को सामाजिक मूल्यों तथा मानदंड के आधार पर देखा जाता है जो सभी समाजों पर आधारित होता है नातेदारी को परिवार के प्रथम इकाई के रूप में देखा गया है परिवार को ऐसे समूह के रूप में भी देखा जा सकता है जिसमें 1 पुरुष या स्त्री अपने बच्चों के साथ माननीय विवाह स्थाई कम या अधिक बंधनों में जीवन जीते है। परिवार भी कई प्रकार की होती है एकल परिवार जिसमें माता–पिता तथा उनके बच्चे रहते हैं संयुक्त परिवार जिनमें कई पीढ़ियों के सदस्यों का एक निवास स्थान तथा एक रसोई हो आर्थिक कार्यप्रणाली भी एक हो इसके अलावा वे परस्पर रक्त संबंधों में बंधे होते हैं भारत की सामाजिक संरचना संयुक्त परिवार वाली है।

भारतीय संयुक्त परिवार का रूप अब कई कारणों से बदलने लगा है जिसमें भूमि कानून बढ़ती जनसंख्या भौतिकवादी जीवन का दबाव आधुनिक शिक्षा आदि इन सभी कारणों से भारतीय संयुक्त परिवार का आकार छोटा होते जा रहा है इस छोटे आकार के परिवार में 2 पीढ़ियों का रहना व्यवहारिक हो गया है जहां पहले संयुक्त परिवार में घर के मुखिया निर्णय लिया करते थे अब उनका नेतृत्व कमजोर पड़ गया है अगर संक्षेप में कहा जाए तो यह कह सकते हैं कि यह संयुक्त परिवार बहुत सीमित और संशोधित होता जा रहा है |परिवार साधारण भाषा में अगर परिवार को समझना चाहते हैं तो उसमें माता–पिता बच्चे नौकर हूं लेकिन जब समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से परिवार को देखते हैं तो इसमें पति पत्नी तथा बच्चों का होना जरूरी है इनमें से किसी भी एक सदस्य के नहीं होने से उसे परिवार नहीं कहा जा सकता है

ISSN-2454-6283 DEER



Scanned with OKEN Scanner